तेरापंथ भवन में विदेशियों का जमावड़ा

अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ

सरदारशहर 12 नवज़्बर, 2010

'आत्मा से आत्मा को देखें' लिखे श्लोग युक्त पीले कवच गोरी चमड़ी, कंठो से निकलते हिन्दी गीत, मंत्रों का शुद्ध उच्चारण देख आश्चर्यचकित हो जाते हैं। यह दृश्य है आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में शुरू हुए अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर का। इस शिविर में रूस, कजाकिस्तान, यूक्रेन, अमेरिका, इंगलैण्ड, नेपाल, भारत आदि देशों से 50 से अधिक लोग भाग ले रहे हैं। चकाचौंध भी जिन्दगी जीने वाले विदेशियों को ध्यान की मुद्रा में देख सबको आश्चर्य होना वाजिब है। 11 से 18 नवज़्बर तक चलने वाले इस शिविर के संभागियों को देखकर ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान आज भी विश्व को अध्यात्म के क्षेत्र में दिशा देने में अग्रणी है। जब इन विदेशियों से बात की जाती है तो एक ही मत नजर आता हे कि हमारी शांति की खोज भारत में ही पूरी होती है। पीछले 9 वर्षों से आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्तित प्रेक्षाध्यान का अज़्यास कर अपने आपको धन्य मानने वाले रसियन शिविरार्थियों के द्वारा तो अपने देशों में प्रेक्षा सेंटरों का संचालन किया जाता है। जहां पर सैकड़ों लोगों को प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण दिया जाता है।

तेरापंथ भवन में शिविर के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि प्रेक्षाध्यान आत्मशुद्धि का मार्ग है। उन्होंने शिविरार्थियों को उपसंपदा दीक्षा प्रदान की। प्रेक्षा इंटरनेशनल संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने हिन्दुस्तानी परज़्परा के अनुसार विदेशी सैलानियों का तिलक लगाकर स्वागत किया। आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने स्वागत भाषण दिया। मुनि नीरजकुमार ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

14 नवज़्बर को पुरस्कार समर्पण समारोह

यूक्रेन की नतालिया को मिलेगा प्रेक्षा पुरस्कार

प्रेक्षाध्यान के अनेक सेन्टर देश विदेश में चल रहे हैं जिसमें जापान, यूक्रेन, कजाकिस्तान, अमेरिका, इंगलैण्ड, जर्मनी, रूस, हॉलैण्ड आदि देश प्रमुख है। इस वर्ष प्रेक्षाध्यान के प्रसार में उत्कृष्ट कार्य करने वाले यूक्रेन सेन्टर की नतालिया को आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 14 नवज़्बर को स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के चेयरमेन ओ.पी. भट्ट के हाथों से 2010 का प्रेक्षा पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला पुरस्कार प्रेक्षाध्यान के क्षेत्र में विशेष शोध, प्रसार एवं प्रशिक्षण का कार्य करने वाले व्यक्तियों को दिया जाता है।

किशोर मण्डल द्वारा प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित

चित्त से होता है चरित्र का निर्माण : आचार्य महाश्रमण

जो चरित्रवान है वह पूज्य होता है। वीतराग को देखते हैं तो अच्छे भाव आते हैं। महापुरुषों के चित्रों को देखने से अच्छी प्रेरणा मिल सकती है। चित्र से चरित्र का निर्माण होता है।

उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने शुक्रवार को तेरापंथ भवन में नित्य प्रवचन के दौरान व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जब हिंसक, कामुक दृश्यों को ज्यादा देखा जाता है तो भावधारा भी वैसी बन जाती है जो अच्छे दृश्यों को देखता है अच्छे लोगों की संगति करता है, ज्ञानियों की सेवा करता है, वह अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है और भावधारा को शुद्ध बनाने का मार्ग जान लेता है।

कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मण्डल द्वारा आयोजित सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये। किशोर मण्डल द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं के प्रायोजक डालचन्द चिण्डालिया ने सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये। तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित श्रमण महावीर एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेजाओं को मूलचन्द विकास कुमार मालू एवं स्वयं सेवक कार्यकर्त्ता के प्रायोजकत्व में दीपचन्द दुगड़, श्रीचन्द नौलखा, राजकुमार बरड़िया, परिषद अध्यक्ष गौतम बाफना, मंत्री कमलेश आंचलिया, हरिश बैद, दीपक पींचा, पारस बुच्चा आदि ने पुरस्कार प्रदान किये। उड़ीसा से समागत संघ का नेतृत्व करते हुए सुरेशचन्द जैन आदि व्यक्तियों ने चातुर्मास की अर्ज की।

सुश्री आभा सिंघवी ने गीत की प्रस्तुति दी। राजकीय अंजुमन विद्यालय की ओर से चुरू जिला संघ द्वारा आचार्य महाश्रमण को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया। जी.एल. नाहर ने कन्या बचाओ कलैण्डर भेंट किया। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)